

ब्रिक्स के मंच पर भारत: नेतृत्व की परीक्षा और वैश्विक दक्षिण की नई उम्मीद

भारतार्थ खबर

Bhaarataarth.com

विश्व राजनीति इस समय जिस तेजी से बदल रही है, उसमें भारत की राजधानी नई दिल्ली एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक केंद्र बन गई है। 12 और 13 सितंबर को आयोजित होने वाले 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन से पहले दुनिया की निगाहें भारत पर टिकी हैं। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशिकयान समेत कई प्रमुख नेताओं की मौजूदगी इस सम्मेलन के महत्व को रेखांकित करती है। ब्रिक्स का बढ़ता दायरा और वैश्विक अर्थव्यवस्था में इसके सदस्य देशों की महत्वपूर्ण हिस्सेदारी इसे केवल एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन नहीं रहने देती। यह बदलती विश्व व्यवस्था में विकासशील देशों की आवाज, आर्थिक सहयोग और बहुपक्षीय संस्थाओं के बीच कूटनीतिक पंरीक्षा भी है। भारत के लिए अवसर से अधिक जिम्मेदारी ब्रिक्स सम्मेलन की मेजबानी भारत को अपनी विदेश नीति की प्राथमिकताओं को सामने रखने का अवसर देती है। लेकिन अंतरराष्ट्रीय मंच पर नेतृत्व का अर्थ केवल बड़े नेताओं की मेजबानी या भव्य आयोजन नहीं होता। असली कसौटी यह होती है कि सम्मेलन से निकलने वाले निर्णय कितने व्यावहारिक हैं और उनका लाभ सदस्य देशों के नागरिकों तक किस सीमा तक पहुंचता है। भारत लंबे समय से विकासशील देशों के हितों, बहुपक्षवाद और वैश्विक संस्थाओं में व्यापक प्रतिनिधित्व की आवश्यकता पर जोर देता रहा है। ऐसे में भारत के लिए यह महत्वपूर्ण है कि ब्रिक्स का एजेंडा केवल राजनीतिक बयानबाजी तक सीमित न रहे। व्यापार, निवेश, खाद्य एवं ऊर्जा सुरक्षा, तकनीकी सहयोग, डिजिटल अर्थव्यवस्था, आपूर्ति शृंखला और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर सोस सहयोग की दिशा बननी चाहिए। बदलती दुनिया और आर्थिक अस्थिरता भारत सहित दुनिया की अर्थव्यवस्थाएं इस समय भू-राजनीतिक तनाव से प्रभावित हो रही हैं। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के कारण कच्चे तेल की कीमतों में तेज वृद्धि हुई है और शुक्रवार को ब्रेंट क्रूड 108 डॉलर प्रति बैरल के पार चला गया। इसका सीधा असर भारत जैसे बड़े तेल आयातक देश पर पड़ सकता है। इसी चिंता के बीच भारतीय शेयर बाजार में भी शुक्रवार को व्यापक गिरावट दर्ज की गई और निफ्टी 25 सूचकांक तीन महीने के निचले स्तर तक पहुंच गए। यह परिस्थिति बताती है कि आज आर्थिक नीति को विदेश नीति से अलग करके नहीं देखा जा सकता। युद्ध कहीं और हो, समुद्री मार्ग प्रभावित हो या तेल की कीमत बढ़े –उसका असर भारतीय परिवार के बजट, परिवहन लागत, उद्योग और महंगाई पर पड़ सकता है। इसलिए ब्रिक्स जैसे मंच पर ऊर्जा सुरक्षा और आपूर्ति शृंखला की स्थिरता केवल सरकारी दस्तावेजों के विषय नहीं हैं। इनके पीछे आम नागरिक की रसोई, किसान की लागत, उद्योग की प्रतस्पर्धा और रोजगार की संभावनाएं जुड़ी हुई हैं। चीन के साथ संवाद की चुनौती ब्रिक्स सम्मेलन भारत और चीन के संबंधों के लिहाज से भी महत्वपूर्ण है। शी जिनपिंग को भारत यात्रा ऐसे समय हो रही है जब दोनों देशों के बीच सीमा विवाद, व्यापार असंतुलन और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा जैसे मुद्दे मौजूद हैं। सम्मेलन के दौरान दोनों देशों के नेताओं के बीच बातचीत की संभावना को इसलिए विशेष महत्व दिया जा रहा है। भारत के लिए यह संतुलन बेहद जरूरी है। पड़ोसी देश के साथ संवाद बनाए रखना और राष्ट्रीय सुरक्षा हितों पर दृढ़ रहना–दोनों बातें एक साथ संभव होनी चाहिए। कूटनीति का उद्देश्य मतभेदों को छिपाना नहीं, बल्कि उन्हें नियंत्रित करते हुए सहयोग के रास्ते तलाशना है। व्यापार और आर्थिक संबंधों में स्थिरता दोनों देशों के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं होना चाहिए कि सुरक्षा संबंधी चिंताओं को नजर अंदाज किया जाए। भारत को अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए संवाद और राष्ट्रीय हित के बीच संतुलित रास्ता अपनाना होगा। रूस, ईरान और पश्चिम के बीच संतुलन भारत की विदेश नीति की एक विशेषता यह रही है कि उसने विभिन्न शक्ति केंद्रों के साथ अपने संबंधों को एक-दूसरे के विरुद्ध खड़ा करने के बजाय स्वतंत्र निर्णय

गुरुवाणी का संदेश और मृत्युभोज से मुक्ति की सामाजिक जिम्मेदारी

भारतार्थ खबर

Bhaarataarth.com

किसी भी समाज की पहचान केवल उसकी परंपराओं और रीति-रिवाजों से नहीं होती, बल्कि इस बात से होती है कि वह समय के साथ अपनी परंपराओं में सुधार करने की क्षमता कितनी रखता है। जो परंपराएं समाज को जोड़ती हैं, मानवीय संवेदना बढ़ाती हैं और जीवन-मूल्यों को मजबूत करती हैं, उन्हें संजोना आवश्यक है। लेकिन ऐसी रूढ़ियां जो परिवारों पर अनावश्यक आर्थिक बोझ डालें, शोकग्रस्त व्यक्ति को सामाजिक दबाव में डालें या दिखावे की प्रतिस्पर्धा को जन्म दें, उनके बारे में विचार करना भी सामाजिक जिम्मेदारी है। इसी संदर्भ में मृत्युभोज अथवा ओसर-मौसर जैसी प्रथाओं पर गंभीर सामाजिक विमर्श आवश्यक है। कलबी समाज सहित अनेक समुदायों में समय-समय पर संतों, समाज सुधारकों और जागरूक नागरिकों ने ऐसी परंपराओं पर पुनर्विचार का आह्वान किया है। परम आराध्य गुरु महाराज श्री श्री 1008 श्री राजाराम जी महाराज की गुरुवाणी में मृत्युभोज को त्याज्य और अपशय मानने की बात कही जाती रही है। वर्तमान गादीपति महंत श्री श्री 108 श्री दयाराम जी महाराज द्वारा भी सादगीपूर्ण संस्कार और अनावश्यक खर्च से बचने का संदेश दिए जाने का उल्लेख समाज में किया जाता है। इन धार्मिक संदेशों का मूल उद्देश्य किसी की अस्थ्या या परंपरा को ठेस पहुंचाना नहीं, बल्कि समाज को यह सोचने के लिए प्रेरित करना है कि शोक की घड़ी में परिवार को सामाजिक प्रदर्शन का भार क्यों उठाना पड़े? मृत्यु स्वयं एक गहन मानवीय पीड़ा है। किसी परिवार का सदस्य जब संसार से अंतर व्यवस्थाएं आवश्यक हैं, लेकिन इसका दूसरा पहलू भी नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। सम्मेलन के कारण दिल्ली में व्यापक यातायात प्रतिबंध लगाए गए हैं। कई क्षेत्रों में आवाजाही प्रभावित हुई है और आम नागरिकों को अतिरिक्त समय तथा खर्च का सामना करना पड़ रहा है। यह लोकतांत्रिक प्रशासन के लिए एक महत्वपूर्ण सबक है। बड़े अंतरराष्ट्रीय आयोजन देश की प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं, लेकिन उनकी सफलता का मूल्यांकन इस आधार पर भी होना चाहिए कि आम नागरिक को कितनी असुविधा हुई और प्रशासन ने उसे कम करने के लिए कितनी प्रभावी तैयारी की। सुरक्षा और नागरिक सुविधा के बीच संतुलन किसी भी बड़े आयोजन की प्रशासनिक सफलता का महत्वपूर्ण पैमाना होना चाहिए। भारत को केवल मेजबान नहीं, समाधानकर्ता बनना होगा ब्रिक्स सम्मेलन की सबसे बड़ी चुनौती यही है कि भारत अपनी भूमिका को केवल मेजबान देश तक सीमित न रखे। उसे उन मुद्दों पर समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास करना चाहिए जो वैश्विक दक्षिण के देशों के लिए वास्तव में महत्वपूर्ण हैं। जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, डिजिटल विभाजन, विकास वित्त और तकनीकी पहुंच ऐसे विषय हैं जिन पर भारत अपने अनुभव को साझा कर सकता है। भारत की अपनी विकास यात्रा में उपलब्धियां भी हैं और चुनौतियां भी। इन्हीं अनुभवों के आधार पर वह विकासशील देशों के लिए व्यावहारिक सहयोग का मॉडल प्रस्तुत कर सकता है। संपादकीय निष्कर्ष ब्रिक्स सम्मेलन भारत की विदेश नीति और वैश्विक नेतृत्व के लिए महत्वपूर्ण अवसर है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं होना चाहिए कि रूसियों की प्रतस्पर्धा को नज़रअंदाज कर दिया जाए। भारत को अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए संवाद और राष्ट्रीय हित के बीच संतुलित रास्ता अपनाना होगा। रूस, ईरान और पश्चिम के बीच संतुलन भारत की विदेश नीति की एक विशेषता है।

करने का दबाव आ जाए, तो दुख के साथ आर्थिक चिंता भी जुड़ जाती है। ग्रामीण और निम्न-मध्यम आय वर्ग के परिवारों के लिए यह समस्या और गंभीर हो सकती है। कई बार सामाजिक अपेक्षाओं को पूरा



करने के लिए परिवार कर्ज तक लेने को विवश हो जाता है। ऐसी स्थिति में एक प्रश्न स्वाभाविक है—क्या किसी दिवंगत व्यक्ति के प्रति सम्मान का सबसे उचित तरीका परिवार को आर्थिक संकट में डालना हो सकता है? निश्चित रूप से नहीं। दिवंगत व्यक्ति की स्मृति का सम्मान सादगी, सेवा, सदाचार और परिवार के प्रति विदा होता है, तो उसके परिजन मानसिक और भावनात्मक रूप से पहले ही कठिन परिस्थिति से गुजर रहे होते हैं। ऐसे समय में यदि परिवार पर बड़े आयोजन, बड़ी संख्या में लोगों का भोजन कराने, सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने और खर्च

सकते हैं, जिनसे किसी प्रियजन की स्मृति को सकारात्मक सामाजिक कार्य से जोड़ा जा सकता है। यहां यह अंतर समझना भी आवश्यक है कि शोक-संस्कार और दिखावटी भोज एक ही बात नहीं हैं।



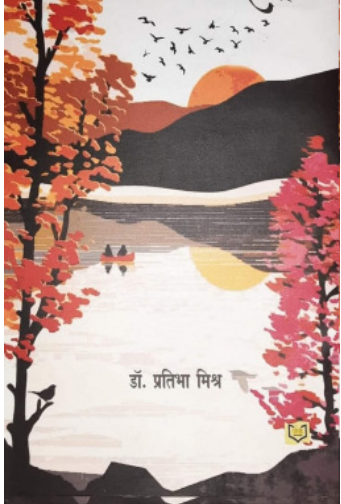
प्रेषक, लेखक: किशनाराम पटेल गुरुवाणी प्रकाशक एवं सामाजिक विश्लेषक

समाज के पंच, बुजुर्ग, शिक्षाविद, संत-महात्मा, जनप्रतिनिधि और युवा महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उन्हें यह वातावरण बनाना चाहिए कि किसी परिवार द्वारा सादगी से संस्कार करने पर उसे कमतर न समझा जाए। बल्कि सादगी अपनाने वाले परिवार का सम्मान किया जाए। सामाजिक सुधार का एक बड़ा सिद्धांत है—जिस कुरीति को समाप्त करना हो, उसके स्थान पर बेहतर विकल्प भी देना होता है। केवल यह कहना पर्याप्त नहीं कि मृत्युभोज मत करो। समाज को यह भी बताना होगा कि शोक की अवधि में परिवार की सहायता कैसे की जाए, कौन से संस्कार आवश्यक हैं, किन खर्चों से बचा जा सकता है और बची हुई राशि का उपयोग किस प्रकार जनहित में किया जा सकता है। यदि किसी परिवार ने मृत्युभोज पर होने वाले बड़े खर्च के स्थान पर बच्चों की शिक्षा, परिवार की आर्थिक सुरक्षा या किसी जरूरतमंद की सहायता को चुना, तो यह मृत व्यक्ति के प्रति

धार्मिक परंपराओं में अंतिम संस्कार और उससे जुड़े आवश्यक कर्मकांडों का अपना स्थान है। किसी परिवार की निजी श्रद्धा और धार्मिक आस्था का सम्मान किया जाना चाहिए। सामाजिक सुधार का अर्थ यह नहीं कि सभी परिवारों पर एक समान व्यवस्था थोपी जाए। सुधार का रास्ता जागरूकता, संवाद और स्वेच्छिक परिवर्तन से होकर गुजरना अधिक प्रभावी होता है। मृत्युभोज के विरोध का सबसे

महामंत्री-विश्व हिंदी शोध एवं संवर्धन अकादमी आजमगढ़ इकाई

तक पहुंचने का सुनहरा सपना साकार होता है। तब कविताएं..... दूध जैसी चंदनी



सी वसंत ऋतु हवा की चिट्ठी गुनगुनाती धूप बसती पवन ने छुवा इत्यादि प्रस्फुटित होती हैं।

डॉ. प्रतिभा मिश्र एक नारी हैं। नारी मन में प्रेम का अगाध सागर समाहित होता है।

प्रतिभा जी ने स्त्री जीवन की संपूर्ण पीड़ा एवं विसंगतियों को कुछ समय के लिए भूलकार प्रेम में जीने का अनुपम प्रयास किया है। मिल अगर जाओ नामक शीर्षक की चार पंक्तियां प्रेम की पराकाष्ठा से परिपूर्ण है.....

मिल अगर जाओ तुम,प्यार-मनुहार हो।
नेह की लौ जले, दिव्य उपहार हो।
दूरियां इतनी आवे, ठीक नहीं लगती।
सामने आओ तो, एक त्वीहार हो॥
इनकी छंद युक्त रचनाओं के साथ-साथ छंद मुक्त रचनाएं अत्यंत प्रभावित करती हैं।काव्य का प्रवाह छंद मुक्त रचनाओं में भरपूर समाहित है। पुस्तक के अंत में अंकित मुक्तक मन को छूने का हर संभव प्रयास करते हैं। इसमें एक मुक्तक तो मुझे कंठस्थ ही हो गया.....
आज नहीं तो कल मिलना है,
सभी व्यवस्थित पल मिलना है,

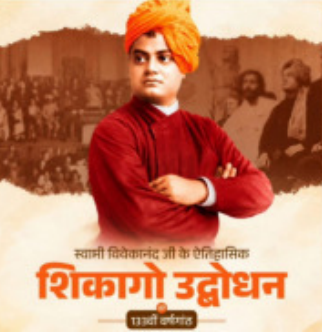
सब की सीमा निर्धारित है ,
हर प्रश्नों का हल मिलना है ॥
प्रतिभा जी की पुस्तक मन गगन सा हिंदी साहित्य जगत में एक नया कीर्तिमान स्थापित करें यही हमारी शुभकामनाएं हैं।

ईमानदारी का व्यवहार ही कारोबार की सबसे बड़ी पूंजी

चांचना उसके लिए संभव नहीं होता। वह विक्रेता भी जानकारी और दवे पर विश्वास करता है। यही विश्वास बाजार की बुनियादी सामाजिक पूंजी है। जहां यह विश्वास टूटता है, वहां व्यापार का रिसता लेन-देन से आगे नहीं बढ़ पाता। ग्राहक का यदि एक बार यह महसूस हो जाए कि उसे कम तौला गया, गलत जानकारी दी गई या खराब वस्तु को अच्छी बताकर बेचा गया, तो वह अगली बार उसी दुकान पर जाने से पहले कई अधिक कीमत वसूल किए बिना काम नहीं चल सकता। यह सोच न केवल नैतिक दृष्टि से गलत है, बल्कि लंबे समय के कारोबार की वास्तविकता के विपरीत भी है। ईमानदारी किसी व्यापार की कमजोरी नहीं, उसकी सबसे मजबूत पूंजी है। पैसा समाप्त हो सकता है, माल बदल सकता है और बाजार की परिस्थितियां भी बदल सकती हैं, लेकिन वर्षों में अर्जित विश्वसनीयता किसी व्यक्ति यहां केवल विश्व के नेता नहीं मिल रहे हैं—यहां बदलती विश्व व्यवस्था की दिशा पर भी बहस हो रही है। भारत को इस अवसर का उपयोग शक्ति प्रदर्शन के लिए नहीं, बल्कि समाधान प्रस्तुत करने के लिए करना चाहिए। यह जिम्मेदार वैश्विक नेतृत्व की असली पहचान होगी।

अनादर नहीं, बल्कि उसके जीवन-मूल्यों को आगे बढ़ाने का माध्यम हो सकता है। परंपराओं के संबंध में एक और महत्वपूर्ण बात है—हर पुरानी चीज गलत नहीं होती और हर नई चीज सही नहीं होती। विवेक का अर्थ यही है कि हम परंपरा को उसके उद्देश्य और वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों की कसौटी पर देखें। जो परंपरा मानवीय गरिमा, संवेदना और सामाजिक एकता को बढ़ाती है, उसे बचाना चाहिए। जो परंपरा अनावश्यक आर्थिक बोझ या सामाजिक दबाव पैदा करती है, उसमें सुधार की गुंजाइश तलाशनी चाहिए। गुरुवाणी का व्यापक संदेश भी यदि सत्य, संयम, सेवा, सादगी और सदाचार की दिशा में प्रेरित करता है, तो उसका वास्तविक सम्मान तभी होगा जब इन मूल्यों को व्यवहार में उतारा जाए। केवल धार्मिक वचनों का स्मरण करना पर्याप्त नहीं; जीवन में उनका आचरण ही उनके महत्व को प्रमाणित करता है। इसी दृष्टि से गुरुवाणी ही गीता ज्ञान की खान है जैसे भाव को समाज के लिए आत्ममंथन का अवसर बनाया जा सकता है। धर्म का उद्देश्य मनुष्य को विवेकशील बनाना है, न कि सामाजिक दबाव में बांधना। किसी भी धार्मिक शिक्षा की सार्थकता तब बढ़ती है जब वह मनुष्य के जीवन से भय, जाए। सामाजिक सुधार का एक बड़ा सिद्धांत है—जिस कुरीति को समाप्त करना हो, उसके स्थान पर बेहतर विकल्प भी देना होता है। केवल यह कहना पर्याप्त नहीं कि मृत्युभोज मत करो। समाज को यह भी बताना होगा कि शोक की अवधि में परिवार की सहायता कैसे की जाए, कौन से संस्कार आवश्यक हैं, किन खर्चों से बचा जा सकता है और बची हुई राशि का उपयोग किस प्रकार जनहित में किया जा सकता है। यदि किसी परिवार ने मृत्युभोज पर होने वाले बड़े खर्च के स्थान पर बच्चों की शिक्षा, परिवार की आर्थिक सुरक्षा या किसी जरूरतमंद की सहायता को चुना, तो यह मृत व्यक्ति के प्रति

दिग्विजय दिवस: स्वामी विवेकानंद का संदेश और विश्वबंधुत्व की भारतीय दृष्टि



भारतार्थ खबर

Bhaarataarth.com

11 सितंबर भारत के आधुनिक इतिहास की उन महत्वपूर्ण तिथियों में शामिल है, जिसने विश्व मंच पर भारतीय ज्ञान, अध्यात्म और सांस्कृतिक दृष्टि की प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराई। वर्ष 1893 में इसी दिन अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित विश्व धर्म संसद में स्वामी विवेकानंद ने ऐसा ऐतिहासिक संबोधन दिया, जिसने भारत की आध्यात्मिक परंपरा के प्रति विश्व समुदाय का ध्यान आकर्षित किया। इस ऐतिहासिक अवसर की 133वीं वृषगांठ पर मनाया जा रहा दिग्विजय दिनोत्सव केवल अतीत की स्मृति का अवसर नहीं, बल्कि उन मानवीय मूल्यों को पुनः समझने का अवसर है, जिनकी आज की दुनिया को पहले से अधिक आवश्यकता है। स्वामी विवेकानंद का शिकागो संबोधन इसलिए महत्वपूर्ण नहीं था कि एक भारतीय संन्यासी ने विदेशी भूमि पर भाषण दिया। उसकी वास्तविक महत्ता इस बात में थी कि उन्होंने भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा को संकीर्णता से अलग करते हुए उसे सह-अस्तित्व, सहिष्णुता, संवाद और व्यापक मानवीय एकता की दृष्टि से प्रस्तुत किया। उन्होंने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि भारतीय चिंतन की मूल भावना केवल अपने मत को श्रेष्ठ मानने तक सीमित नहीं है, बल्कि विभिन्न आध्यात्मिक मार्गों के प्रति सम्मान और स्वीकार की भावना में निहित है। शिकागो की वह ऐतिहासिक वक्तव्य केवल सरकारी निगरानी से ईमानदार बाजार तैयार नहीं हो सकता। इसके लिए व्यापारी और उपभोक्ता दोनों की जिम्मेदारी आवश्यक है। व्यापारी को समझना होगा कि ग्राहक को धोखा देकर कमाया गया लाभ स्थायी नहीं होता। वहीं उपभोक्ता को भी केवल सबसे कम कीमत के पीछे भागने के बजाय गुणवत्ता, बिल, पैकेजिंग, प्रमाणिकता और विक्रेता की विश्वसनीयता पर ध्यान देना चाहिए। कई बार अत्यधिक सस्ती वस्तु के पीछे छिपी गुणवत्ता की समस्या बाद में महंगी पड़ सकती है।

शिक्षित परिवारों की जिम्मेदारी है कि वे सामाजिक दबाव के बजाय विवेकपूर्ण निर्णय का उदाहरण प्रस्तुत करें। यह परिवर्तन किसी एक व्यक्ति, संगठन या धार्मिक नेतृत्व के प्रयास से संभव नहीं होगा। इसके लिए पूरे समाज को मिलकर वातावरण तैयार करना होगा। मृत्युभोज के स्थान पर संवेदना, दिखावे के स्थान पर सादगी और अनावश्यक खर्च के स्थान पर सेवा को सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार बनाना होगा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी परिवार को उसकी परिस्थिति के आधार पर दोषी नहीं ठहराया जाना चाहिए। सामाजिक सुधार सहानुभूति से होता है, आरोप से नहीं। जो परिवार परंपरा और सदाचार की दिशा में प्रेरित करता है, जो उसके प्रति भी सम्मान बना रहे और जो परिवार द्वारा चुनता है, उसे भी समान सम्मान मिले—यही संतुलित सामाजिक दृष्टिकोण होगा। अंततः किसी व्यक्ति की विदाई उसके पीछे छोड़े गए भोज की भव्यता से नहीं, बल्कि उसके जीवन के संस्कारों और परिवार द्वारा निभाए गए मानवीय मूल्यों से याद की जानी चाहिए। यदि किसी प्रियजन की स्मृति में समाज का कोई बच्चा शिक्षित होता है , किसी जरूरतमंद को सहारा मिलता है , किसी परिवार का कर्ज कम होता है या कोई जनहितकारी कार्य आगे बढ़ता है, तो वह स्मृति अधिक स्थायी और सार्थक बन सकती है। सच्ची श्रद्धांजलि वह है जो शोक को सामाजिक संवेदना में बदल दे। गुरुवाणी का संदेश यदि मनुष्य को सादगी, संयम, सेवा और विवेक की ओर ले जाता है, तो मृत्युभोज जैसी सामाजिक कुरीतियों पर पुनर्विचार उसी संदेश की व्यावहारिक अभिव्यक्ति हो सकता है। समय आ गया है कि समाज यह तय करे कि हम मृतक की स्मृति में दिखावे का बोझ बढ़ाए या उसके नाम पर ऐसी परंपरा स्थापित हई हैं, जिससे आने वाली पीढ़ियों का जीवन थोड़ा बेहतर हो। क्योंकि किसी प्रियजन को सच्ची श्रद्धांजलि भारी भोज नहीं, बल्कि उसके नाम से किया गया एक अच्छे कर्म भी हो सकता है।

बेंगलुरु, शनिवार , 12 सितम्बर 2026

दक्षिणांचल समाचार

Bhaarataarth.com

3

वंचित समुदायों को अधिकार और हिस्सेदारी के लिए आगे आना होगा: हरिप्रसाद

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 11 सितंबर 2026।

कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस कमेटी (KPCC) के अध्यक्ष बी. के. हरिप्रसाद ने नोमैडिक, सेमी-नोमैडिक और ग्र्री ट्राइब्स यूनिट के नवनियुक्त अध्यक्ष एलप्पा के शपथ ग्रहण समारोह को संबोधित करते हुए वंचित एवं घुमंतू समुदायों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सशक्तीकरण पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि इन समुदायों को स्वयं को कमजोर या छोटा नहीं समझना चाहिए और अपने अधिकारों, शिक्षा तथा सामाजिक न्याय के लिए लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभानी चाहिए। समारोह की शुरुआत समाज सुधार और सामाजिक न्याय के लिए योगदान देने वाले बिरसा मुंडा, डॉ. भीमराव अंबेडकर और देवराज उर्स को श्रद्धांजलि अर्पित कर किए जाने की बात हरिप्रसाद ने कही। बिरसा मुंडा को आदिवासी समाज का महान नेता बताते हुए उन्होंने कहा कि उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष किया और कम उम्र में ही उनका निधन हो गया। हरिप्रसाद ने कहा कि आज भी आदिवासी समाज के बीच बिरसा मुंडा की स्मृति और उनके संघर्ष की प्रेरणा जीवित है। सामाजिक और आर्थिक बराबरी पर जोर हरिप्रसाद ने कहा कि स्वतंत्रता



बावजूद सामाजिक और आर्थिक बराबरी की चुनौती अभी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। उन्होंने नोमैडिक, सेमी-नोमैडिक और अन्य वंचित समुदायों से आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने का आह्वान करते हुए कहा कि उन्हें अपने बच्चों की शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं और उच्चवर्ग भविष्य को प्राथमिकता देनी चाहिए। उन्होंने कहा कि किसी भी समुदाय की प्रगति केवल राजनीतिक प्रतिनिधित्व से नहीं, बल्कि शिक्षा, रोजगार, आर्थिक

अवसर और सामाजिक सम्मान से सुनिश्चित होती है। पारंपरिक कला और संस्कृति को पहचान दिलाने की अपील हरिप्रसाद ने घुमंतू एवं आदिवासी समुदायों की पारंपरिक कला और सांस्कृतिक विरासत को उल्लेख करते हुए कहा कि उनकी कला अंतरराष्ट्रीय स्तर की कला से किसी भी मायने में कम नहीं है। उन्होंने विभिन्न राष्ट्रों में रहने वाले समुदायों की सांस्कृतिक परंपराओं और लोककलाओं का उदाहरण देते हुए कहा कि इन प्रतिभाओं को देश और विदेश में उचित मंच मिलना चाहिए। उन्होंने समुदाय के युवाओं से अपनी पारंपरिक कला पर गर्व करने और उसे आधुनिक मंचों तक पहुंचाने की अपील की।

उनके अनुसार, सांस्कृतिक विरासत केवल अतीत की पहचान नहीं, बल्कि रोजगार और आत्मनिर्भरता का माध्यम भी बन सकती है। लोकतंत्र और मतदान की ताकत को बताया महत्वपूर्ण कांग्रेस नेता ने लोकतंत्र को वंचित समुदायों के अधिकारों की रक्षा का महत्वपूर्ण माध्यम बताते हुए कहा कि मतदान केवल पांच वर्ष में एक बार सरकार चुनने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि अपने भविष्य को प्रभावित करने वाला अधिकार है। उन्होंने समुदाय के लोगों से अपील की कि वे किसी भी प्रकार के व्यक्तिगत प्रलोभन के बजाय शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय और बच्चों के भविष्य जैसे मुद्दों को ध्यान में रखकर मतदान करें। उन्होंने कहा कि मतदाताओं को ऐसी सरकार और जनप्रतिनिधियों का समर्थन करना चाहिए, जो उनके समुदाय के दीर्घकालिक हितों के लिए काम करें। हरिप्रसाद ने यह भी कहा कि छोटे-से-छोटे समुदाय की लोकतंत्र में अपनी भूमिका होती है। उन्होंने लोगों से राजनीतिक रूप से जागरूक होकर अपने मतधिकार का उपयोग करने का आह्वान किया। अधिकारों और कल्याणकारी योजनाओं का किश्रा उल्लेख अपने संबोधन में हरिप्रसाद ने वन अधिकार अधिनियम और खाद्य सुरक्षा कानून का उल्लेख करते हुए कहा कि इन कानूनों ने वंचित और जरूरतमंद वर्गों

के अधिकारों तथा खाद्य सुरक्षा को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि सामाजिक कल्याण से जुड़े कार्यक्रमों का लाभ वास्तविक जरूरतमंद लोगों तक पहुंचना आवश्यक है। उन्होंने कांग्रेस के नेतृत्व वाली पूर्ववर्ती केंद्र सरकारों के दौरान लागू किए गए विभिन्न सामाजिक कल्याणकारी कानूनों का भी उल्लेख किया और कहा कि कांग्रेस पार्टी भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से वंचित वर्गों के साथ खड़ी रहेगी। राजनीतिक प्रतिनिधित्व बढ़ाने की जरूरत हरिप्रसाद ने कहा कि नोमैडिक, सेमी-नोमैडिक और आदिवासी समुदायों में प्रतिभा और नेतृत्व क्षमता की कोई कमी नहीं है। उन्होंने राजनीतिक और सार्वजनिक जीवन में इन समुदायों की अधिक भागीदारी की आवश्यकता बताई। उन्होंने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का उदाहरण देते हुए कहा कि वंचित और आदिवासी समाज के लोगों में भी देश के सर्वोच्च संवैधानिक पदों तक पहुंचने की क्षमता है। उन्होंने समुदाय के लोगों से अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा देने और नई पीढ़ी को नेतृत्व के लिए तैयार करने की अपील की। कांग्रेस के मंच को बताया खुला हरिप्रसाद ने कहा कि कांग्रेस पार्टी के दरवाजे सभी वर्गों के लिए खुले हैं। उन्होंने समुदाय के कार्यक्रमों और सामाजिक गतिविधियों को समर्थन देने की बात कही

तथा संगठन की ओर से कार्यक्रमों के लिए मंच उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। उन्होंने नवनियुक्त नोमैडिक एवं संबंधित यूनिट के अध्यक्ष एलप्पा को शुभकामनाएं देते हुए उनके कार्यकाल की सफलता की कामना की। संघादकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण संदेश हरिप्रसाद के संबोधन का केंद्रीय संदेश सामाजिक न्याय, राजनीतिक जागरूकता, शिक्षा और लोकतांत्रिक भागीदारी के इर्द-गिर्द रहा। हालांकि राजनीतिक मंच से दिए गए वक्तव्यों और आरोपों को संबंधित नेता के दावे के रूप में देखा जाना चाहिए। लोकतांत्रिक व्यवस्था में किसी भी समुदाय की वास्तविक प्रगति के लिए राजनीतिक प्रतिनिधित्व के साथ शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा और आर्थिक अवसरों तक समान पहुंच की उतनी ही आवश्यक है। नोमैडिक और सेमी-नोमैडिक समुदायों के सामने पहचान, शिक्षा, आवास, आजीविका और सामाजिक सुरक्षा से जुड़े प्रश्न लंबे समय से चर्चा का विषय रहे हैं। ऐसे में राजनीतिक दलों और सरकारों की जिम्मेदारी केवल चुनावी समय में इन समुदायों तक पहुंचने तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि नीतियों और योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के माध्यम से स्थायी अवसर उपलब्ध कराने पर भी केंद्रित होनी चाहिए।

GBA की पहली सीएम अध्यक्षता

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 11 सितंबर 2026। मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार ने गुरुवार को ग्रेटर बेंगलुरु अथॉरिटी (GBA) की दूसरी बैठक को संबोधित किया। मुख्यमंत्री के नेतृत्व में हुई यह पहली बैठक थी, जिसमें ग्रेटर बेंगलुरु के समग्र विकास और प्रशासनिक व्यवस्था से जुड़े विषयों पर चर्चा हुई। बैठक में ग्रेटर बेंगलुरु डेवलपमेंट मिनিস्टर एवं GBA के वाइस प्रेसिडेंट कृष्णा बाबुरे गौड़ा, मंत्री के.जे. जॉर्ज और बी.जेड. जमीर अहमद खान सहित जनप्रतिनिधि एवं वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में राज्यसभा सदस्य मंसूर अली खान और लहर सिंह सिरैया, बेंगलुरु विकास प्राधिकरण (BDA) के अध्यक्ष एवं विधायक एन.ए. हैरिस, विधायक दिनेश गुंडरान्न, डॉ. सी.एन. अश्वथ नारायण, के. गोपालैया, एस.टी. सोमशेखर, एस. मुनिराजु और एसी. श्रीनिवास ने भी भाग लिया। इसके अलावा विधान परिषद सदस्य एम. नागराज, सुधम दास, टी.एन. जवाईद गौड़ा, विनय कार्तिक प्रकाश और बी.एस. शिवन्ना भी बैठक में मौजूद रहे। प्रशासनिक स्



पर मुख्य सचिव शालिनी रजनीश, अतिरिक्त मुख्य सचिव तुषार गिरी नाथ, चीफ कमिश्नर महेश्वर राव तथा म्युनिसिपल कमिश्नर एवं GBA के पदेन सदस्यों ने बैठक में सहभागिता की। ग्रेटर बेंगलुरु अथॉरिटी के गठन के बाद यह बैठक शहर के विकास से जुड़े प्रशासनिक दांचे को आगे बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण मानी जा रही है। मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में हुई बैठक में जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों की मौजूदगी से यह संकेत मिला कि बेंगलुरु के व्यापक विकास के लिए सरकार और प्रशासन के बीच समन्वय को प्राथमिकता दी जा रही है।

घोटालों की सरकार का आरोप, चलवाड़ी नारायणस्वामी ने साधा निशाना

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 11 सितंबर 2026। कर्नाटक विधान परिषद में विपक्ष के नेता चलवाड़ी नारायणस्वामी ने राज्य की कांग्रेस सरकार पर भ्रष्टाचार, प्रशासनिक अव्यवस्था और विकास कार्यों में विफलता के आरोप लगाते हुए तीखा हमला बोला है। उन्होंने सरकार पर गंभीर आरोप लगाते हुए इसे घोटालों की सरकार करार दिया और कहा कि मौजूदा सरकार अपने कार्यकाल में उल्लेखनीय विकास परियोजनाएं देने के बजाय विवादों का उपयोग अन्य उद्देश्यों के लिए करने और उसे भूखंडों में परिवर्तित करने की कोशिशें की जा रही हैं। उन्होंने केआईएडीवी में लेआउट मानचित्रों में पार्क क्षेत्र के कथित बदलाव और करोड़ों रुपये के भ्रष्टाचार के आरोप भी लगाए। इसके अलावा उन्होंने बीडीए, पावर कॉर्रोसेशन और भ्रम विभाग में अपेक्षित विकास कार्य नहीं होने का दावा किया। हालाँकि, इन आरोपों की पुष्टि किसी स्वतंत्र जांच या आधिकारिक दस्तावेज से इस बयान में नहीं की गई है। कमून-विपक्ष के नेता ने कांग्रेस के भारत जोड़ो नारायणस्वामी ने राज्य की कानून-व्यवस्था को लेकर गृह मंत्री पर भी निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि गृह विभाग अपराध और नागरिक सुरक्षा के मुद्दों पर पर्याप्त ध्यान देने के बजाय

जा रहा है। उन्होंने इसे आम जनता के कर के पैसे से जुड़ा गंभीर विषय बताते हुए सरकार से खर्च और धन के स्रोत को लेकर पारदर्शिता की मांग की। इन आरोपों पर सरकार की ओर से तत्काल कोई विस्तृत प्रतिक्रिया उपलब्ध नहीं है। इसलिए इन दावों की स्वतंत्र पुष्टि आवश्यक है। पार्क भूमि और सरकारी संस्थाओं में अनियमितता का आरोप नारायणस्वामी ने बेंगलुरु विकास प्राधिकरण (बीडीए), आवास बोर्ड और कर्नाटक औद्योगिक क्षेत्र विकास बोर्ड (केआईएडीवी) से जुड़े भूमि मामलों पर भी सवाल उठाए। उन्होंने आरोप लगाया कि पार्कों के लिए निर्धारित भूमि का उपयोग अन्य उद्देश्यों के लिए करने और उसे भूखंडों में परिवर्तित करने की कोशिशें की जा रही हैं। उन्होंने केआईएडीवी में लेआउट मानचित्रों में पार्क क्षेत्र के कथित बदलाव और करोड़ों रुपये के भ्रष्टाचार के आरोप भी लगाए। इसके अलावा उन्होंने बीडीए, पावर कॉर्रोसेशन और भ्रम विभाग में अपेक्षित विकास कार्य नहीं होने का दावा किया। हालाँकि, इन आरोपों की पुष्टि किसी स्वतंत्र जांच या आधिकारिक दस्तावेज से इस बयान में नहीं की गई है। कमून-विपक्ष के नेता ने कांग्रेस के भारत जोड़ो नारायणस्वामी ने राज्य की कानून-व्यवस्था को लेकर गृह मंत्री पर भी निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि गृह विभाग अपराध और नागरिक सुरक्षा के मुद्दों पर पर्याप्त ध्यान देने के बजाय

बेंगलुरु में तीन दिवसीय माताजी प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव 12 से

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 11 सितंबर 2026। बेंगलुरु में श्री मातेश्वरी भक्त मंडल ट्रस्ट (रंजि.) तीसरा क्रॉस रोड, आशीर्वाद नगर, सोनम लेआउट, पोस्ट कोथनूर, डोड्डगुब्बली, बेंगलुरु-560077 की ओर से तीन दिवसीय माताजी प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन 12 से 14 सितंबर 2026 तक किया जाएगा। धार्मिक आयोजन के दौरान माताजी पाठ, अखंड ज्योत एवं तस्वीर स्थापना, हवन-यज्ञ, भजन संध्या, पूणाहुति और महाप्रसादी सहित विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित होंगे। आयोजन की शुरुआत 12 सितंबर, शनिवार को सुबह 8:15 बजे से होगी। इसी दिन शाम 7:15 बजे महाप्रसादी तथा रात 8:35 बजे विशाल भजन संध्या का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में श्रद्धालुओं के बड़ी संख्या में शामिल होने की संभावना है। 13 सितंबर, रविवार को सुबह 5:15 बजे अखंड ज्योत नगर से मुहूर्त का कार्यक्रम होगा। दोपहर 2:30 बजे प्रसादी तथा शाम 7:30 बजे महाप्रसादी का आयोजन होगा। इसके बाद रात 8:30 बजे भजन संध्या में भजन कलाकार धार्मिक प्रस्तुतियां देंगे। महोत्सव के अंतिम दिन 14 सितंबर, सोमवार को सुबह 6:15 बजे माताजी पाठ, अखंड ज्योत एवं तस्वीर स्थापना का शुभ मुहूर्त रखा गया है। सुबह 9:25 बजे पूणाहुति होगी। इसके बाद सुबह 11 बजे गुरुदेव के आगमन तथा दोपहर 12:15 बजे लाभार्थी परिवार के बहुमान एवं महाप्रसादी का कार्यक्रम होगा। कार्यक्रम में जुगलकिशोर परिहार (जोधपुर), राजू भाई कुमावत (भैरूर), कैलाशजी पंचार (गागुड़ा), श्रवणजी माली (निम्बाहेड़ा) और गीता मेवाड़ा (जोधपुर) सहित विभिन्न भजन कलाकार अपनी प्रस्तुतियां देंगे।

आयोजन से जुड़े संदेश में स्वामी श्री पुष्करदास महाराज ने श्रद्धालुओं से निर्धारित समय पर डोड्डगुब्बली गौशाला में पहुंचकर जाजम, हवन-यज्ञ तथा अन्य सेवा कार्यों में सहभागिता निभाने का आह्वान किया है। आयोजकों के अनुसार धार्मिक आयोजन में शामिल होने वाले श्रद्धालुओं के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं की जा रही हैं।

जा रहा है। उन्होंने इसे आम जनता के कर के पैसे से जुड़ा गंभीर विषय बताते हुए सरकार से खर्च और धन के स्रोत को लेकर पारदर्शिता की मांग की। इन आरोपों पर सरकार की ओर से तत्काल कोई विस्तृत प्रतिक्रिया उपलब्ध नहीं है। इसलिए इन दावों की स्वतंत्र पुष्टि आवश्यक है। पार्क भूमि और सरकारी संस्थाओं में अनियमितता का आरोप नारायणस्वामी ने बेंगलुरु विकास प्राधिकरण (बीडीए), आवास बोर्ड और कर्नाटक औद्योगिक क्षेत्र विकास बोर्ड (केआईएडीवी) से जुड़े भूमि मामलों पर भी सवाल उठाए। उन्होंने आरोप लगाया कि पार्कों के लिए निर्धारित भूमि का उपयोग अन्य उद्देश्यों के लिए करने और उसे भूखंडों में परिवर्तित करने की कोशिशें की जा रही हैं। उन्होंने केआईएडीवी में लेआउट मानचित्रों में पार्क क्षेत्र के कथित बदलाव और करोड़ों रुपये के भ्रष्टाचार के आरोप भी लगाए। इसके अलावा उन्होंने बीडीए, पावर कॉर्रोसेशन और भ्रम विभाग में अपेक्षित विकास कार्य नहीं होने का दावा किया। हालाँकि, इन आरोपों की पुष्टि किसी स्वतंत्र जांच या आधिकारिक दस्तावेज से इस बयान में नहीं की गई है। कमून-विपक्ष के नेता ने कांग्रेस के भारत जोड़ो नारायणस्वामी ने राज्य की कानून-व्यवस्था को लेकर गृह मंत्री पर भी निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि गृह विभाग अपराध और नागरिक सुरक्षा के मुद्दों पर पर्याप्त ध्यान देने के बजाय

राजनीतिक मुद्दों में अधिक सक्रिय दिखाई देता है। उन्होंने कुछ पुलिस थानों को कथित रूप से रियल एस्टेट विवादों और स्थायी मामलों से जोड़ते हुए पुलिस व्यवस्था की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए। उन्होंने गंभीर अपराधों, विशेषकर महिलाओं और दलित समुदाय से जुड़े मामलों में सरकार की प्रतिक्रिया को लेकर भी आलोचना की। विपक्ष के नेता ने व्यंग्यात्मक टिप्पणी करते हुए गृह विभाग के पुर्नगठन की मांग तक कर दी। सरकारी कर्मचारियों की सेवा को लेकर भी आरोप नारायणस्वामी ने सरकारी कर्मचारियों की सेवा संबंधी मामलों का उल्लेख करते हुए कहा कि निष्पत्ती सरकार के दौरान हजारों कर्मचारियों को विधायित किया गया था, जबकि मौजूदा सरकार में कुछ कर्मचारियों के खिलाफ अचानक करवाई की गई है। उन्होंने मंत्री कृष्णा बाबुरे गौड़ा की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए कुछ कर्मचारियों को सेवा से हटाए जाने का दावा किया। उन्होंने आरोप लगाया कि भ्रष्टाचार के आरोपों पर राजनीतिक और जातिगत मुद्दों को सामने लाकर मूल सवाल से ध्यान हटाने की कोशिश की जाती है। इन आरोपों पर संबंधित विभाग या मंत्री की प्रतिक्रिया समाचार के लिए उपलब्ध नहीं है। मंत्रियों की कार्यशैली पर तीखी टिप्पणी भाजपा नेता ने मंत्री बसवराज रायरेड्डी के संबंध में भी तीखी और व्यंग्यात्मक टिप्पणी की। उन्होंने सरकार की सामूहिक कार्यशैली पर सवाल उठाते हुए पूछा कि क्या मंत्रिमंडल के सदस्य प्रशासनिक गंभीरता के साथ काम कर रहे हैं। उन्होंने प्रशासनिक तंत्र में कथित अराजकता का आरोप लगाते हुए एक अंडर सेक्रेटरी स्तर के अधिकारी द्वारा जारी किए गए आदेश पर भी सवाल उठाया। उन्होंने संबंधित अधिकारी के खिलाफ करवाई की मांग की और कहा कि प्रशासनिक प्रक्रिया में नियमों और संवैधानिक संस्थाओं का सम्मान किया जाना चाहिए। प्रशासन में बदलाव की मांग चलवाड़ी नारायणस्वामी ने कहा कि सरकार की कथित विफलताओं के खिलाफ विपक्ष को केवल भाषणों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि लोकतांत्रिक तरीके से मजबूत संघर्ष करना चाहिए। उन्होंने नेता के कथित दुर्ग्रहयोग और भ्रष्टाचार पर रोक लगाने के लिए प्रशासनिक मशीनरी में व्यवस्थित बदलाव की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित करना विपक्ष और लोकतांत्रिक संस्थाओं की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। आरोपों की राजनीतिक प्रत्येकभूमि भी महत्वपूर्ण नारायणस्वामी के बयान को कर्नाटक की सत्तारूढ़ कांग्रेस और विपक्षी भाजपा के बीच जारी राजनीतिक टकराव के संदर्भ में देखा जा रहा है। विपक्ष द्वारा सरकार पर भ्रष्टाचार और प्रशासनिक विफलता के आरोप लगाए जा रहे हैं, जबकि ऐसे आरोपों की अंतिम पुष्टि सक्षम जांच एजेंसियों, आधिकारिक दस्तावेजों या न्यायिक प्रक्रिया के आधार पर ही की जा सकती है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में विपक्ष द्वारा सरकार से सवाल पूछना आवश्यक है, लेकिन उतना ही महत्वपूर्ण वह भी है कि सार्वजनिक जीवन में लगाए जाने वाले गंभीर आरोप प्रामाण और जांच की कसौटी पर खरे उतरें। भ्रष्टाचार, भूमि उपयोग, सरकारी निवृत्तियों और कानून-व्यवस्था जैसे विषय सही जनता के हितों से जुड़े हैं। इसलिए इन मामलों में राजनीतिक बयानबाजी के साथ पारदर्शी जांच और तथ्यात्मक जवाबदेही भी जरूरी है।

लालबाग बचेगा, टनल बदलेगी राह

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 11 सितंबर 2026। बेंगलुरु की बहुचर्चित टनल रोड परियोजना को लेकर राज्य सरकार ने बड़ा रुख स्पष्ट करते हुए कहा है कि प्रस्तावित मार्ग के लिए ऐतिहासिक लालबाग की जमीन का इस्तेमाल नहीं किया जाएगा। परियोजना के लिए अब वैकल्पिक मार्ग तलाशे जा रहे हैं। हालांकि, नया मार्ग कौन-सा होगा, इस पर अभी अंतिम निर्णय नहीं हुआ है। परिवहन मंत्री रामलिंग रेड्डी के अनुसार, टनल रोड के लिए लालबाग की जमीन लेने का प्रस्ताव आगे नहीं बढ़ाया जाएगा। अधिकारियों और संबंधित एजेंसियों की ओर से कुछ वैकल्पिक मार्ग सुझाए गए हैं, जिनकी तकनीकी और व्यवहारिक संभावनाओं का अध्ययन किया जा रहा है। अंतिम फैसला विस्तृत परीक्षण के बाद ही लिया जाएगा। पार्क भूमि विधेयक का बाद बदला परिदृश्य सरकार का यह रुख ऐसे समय सामने आया है, जब कर्नाटक सरकार ने हाल ही में विवादित पार्क भूमि संशोधन विधेयक वापस ले लिया था। इस विधेयक में सरकारी पार्कों की कुल भूमि के अधिकतम पांच प्रतिशत से हिस्से को सार्वजनिक उपयोगिता और अधोसंरचना परियोजनाओं के लिए इस्तेमाल करने का प्रावधान प्रस्तावित था।

कावेरी पर सोमवार को सुप्रीम कोर्ट में अपील, किसानों के हितों की रक्षा का दावा: चालुवरायस्वामी

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

मांड्या, 11 सितंबर 2026। कावेरी नदी जल कंट्रोलर को लेकर कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच जारी विवाद के बीच कर्नाटक के जल संसाधन मंत्री एवं मांड्या जिला प्रभारी एन. चालुवरायस्वामी ने कहा है कि तमिलनाडु को कावेरी जल छोड़ें जाने



के संबंध में राज्य सरकार की अपील पर सोमवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई प्रस्तावित है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार किसानों के हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है और इस मामले में सरकार की कानूनी टीम अवगत के समक्ष मजबूत पक्ष रख रही है। मांड्या में मीडिया से बातचीत करते हुए मंत्री ने कहा कि कर्नाटक वर्तमान में जल संकट की स्थिति से जूझ रहा है। इसके बावजूद संघीय व्यवस्था के तहत अदालत के आदेशों का सम्मान करना सरकार की संवैधानिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार इस मामले में कानूनी विवरणों का इस्तेमाल करते हुए किसानों के हितों को सुनिश्चित रखने का प्रयास कर रही है। कानूनी प्रक्रिया के तहत पानी छोड़ने की बात चालुवरायस्वामी ने कहा कि कावेरी जल प्रबंधन से संबंधित आदेश की अवहेलना करते हुए सीधे अवैध करों पर उसे खारिज किए जाने की संभावना हो सकती है। उन्होंने कहा कि कानूनी विशेषज्ञों की सलाह के आधार पर सोमवार को प्रयास कर रहे हैं। तमिलनाडु के लिए निश्चित जल छोड़े जाने की प्रक्रिया का पालन करना आवश्यक

है। मंत्री ने दावा किया कि पिछले करीब दो दशकों में तमिलनाडु को छोड़े गए पानी की यह सबसे कम मात्रा है। उन्होंने कहा कि इससे पहले भी गंभीर जल संकट के समय लगभग 35 टीएमसी पानी छोड़े जाने के उदाहरण सामने आए हैं। उन्होंने देहराया कि सरकार का प्रयास किसानों और अन्नदाताओं के हितों की रक्षा करना है। किसानों की फसलों के लिए जलापूर्ति जारी जल संसाधन मंत्री ने बताया कि वर्तमान में बांध प्रणाली के माध्यम से किसानों की फसलों के लिए पानी उपलब्ध कराया जा रहा है। साथ ही जलाशयों और झीलों में पानी भरने का कार्य भी जारी है। उन्होंने कहा कि कावेरी बेसिन के चार प्रमुख जलाशयों में पर्याप्त जल भंडारण बनाए रखने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि दिसंबर से अमले वनूं तक लोगों को फेब्रुजल संकट का सामना न करना पड़े। मंत्री के अनुसार, सरकार के सामने एक ओर किसानों की सिंचाई आवश्यकताओं और दूसरी ओर शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की फेब्रुजल जरूरतों के बीच संतुलन बनाए रखने की चुनौती है। विपक्ष से राजनीतिक हद्द से बचने की बात चालुवरायस्वामी ने कहा कि सरकार कावेरी जल विवाद को लेकर विपक्षी दलों के साथ राजनीतिक बयानबाजी में उलझना नहीं चाहती। उन्होंने कहा कि इस विषय का स्थायी समाधान कानूनी और प्रशासनिक स्तर पर तलाशना आवश्यक है। उन्होंने कर्नाटक के भाजपा सांसदों और केंद्रीय मंत्रियों से महादयी तथा मेकेदातु परियोजनाओं को केंद्र सरकार से आवश्यक मंजूरी दिलाने की दिशा में सक्रिय भूमिका निभाने की अपील की। उन्होंने कहा कि यदि केंद्र और राज्य के स्तर पर सभी पक्ष मिलकर आगे बढ़ें, तो जल विवादों के समाधान की दिशा में ठोस प्रगति हो सकती है।

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

मांड्या, 11 सितंबर 2026। मांड्या जिले के आगामी एसएसएलसी परीक्षा परिणाम में कर्नाटक में प्रथम स्थान पर लाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। जिला प्रभारी मंत्री एवं जल संसाधन मंत्री एन. चालुवरायस्वामी ने शिक्षकों, अभिभावकों और प्रशासन से सामूहिक प्रयास करने का आह्वान करते हुए कहा कि यदि सभी मिलकर लक्ष्य के लिए काम करें तो मांड्या का राज्य में शीर्ष स्थान हासिल करना संभव है। उन्होंने घोषणा की कि यदि जिला एसएसएलसी परीणाम में प्रथम स्थान प्राप्त करता है तो शिक्षकों को विशेष उपहार देकर सम्मानित किया जाएगा। मंत्री शुक्रवार को मांड्या शहर स्थित गुरु भवन में जिला प्रशासन, जिला पंचायत और स्कूल शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित जिला स्तरीय शिक्षक दिवस समारोह, सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार वितरण एवं सेवानिवृत्त शिक्षकों के सम्मान समारोह का उद्घाटन करने के बाद संबोधित कर रहे थे। शिक्षक केवल पाठ्यक्रम नहीं, समाज का निर्माण करते हैं चालुवरायस्वामी ने कहा कि शिक्षक को एक कक्षा से दूसरी कक्षा में उतारते कराने तक सीमित नहीं है। शिक्षक विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना, जिम्मेदारी और मानवीय मूल्यों का विकास कर पर तलाशना आवश्यक है। उन्होंने कर्नाटक के भाजपा सांसदों और केंद्रीय मंत्रियों से महादयी तथा मेकेदातु परियोजनाओं को केंद्र सरकार से आवश्यक मंजूरी दिलाने की दिशा में सक्रिय भूमिका निभाने की अपील की। उन्होंने कहा कि यदि केंद्र और राज्य के स्तर पर सभी पक्ष मिलकर आगे बढ़ें, तो जल विवादों के समाधान की दिशा में ठोस प्रगति हो सकती है।



के भीतर छिपी प्रतिष्ठा को पहचानकर उसे सही दिशा देने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। एसएसएलसी में पांचवें स्थान से पहले स्थान का लक्ष्य मंत्री ने बताया कि शिक्षकों, अभिभावकों, जिला पंचायत के मुख्य कार्यकारी अधिकारी और विभिन्न विभागों के संयुक्त प्रयासों ने मांड्या जिला पिछले एसएसएलसी परीणाम में राज्य में पांचवें स्थान पर रहा। अब लक्ष्य जिले को आगामी परीणाम में राज्य में प्रथम स्थान पर लाने का है। उन्होंने शिक्षकों से अपील की कि वे इस लक्ष्य को व्यक्तिगत और सामूहिक संरूप के रूप में लें। चालुवरायस्वामी ने कहा कि यदि शिक्षक ठान लें और विद्यार्थियों तथा अभिभावकों का सहयोग मिले तो यह लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। उन्होंने यह भी उम्मीद जताई कि मांड्या जिला पीयूसी परीक्षा परिणाम में भी राज्य के शीर्ष पांच जिलों में अपनी जगह बनाएगा। अख्ये परिणाम पर शिक्षकों को विशेष सम्मान चालुवरायस्वामी ने कहा कि एसएसएलसी में जिले के प्रथम स्थान पर आने की स्थिति में शिक्षकों को विशेष उपहार देकर सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने संकेत दिया कि यह सम्मान शिक्षकों के लिए यादगार होगा। मंत्री ने कहा कि परीक्षा परिणाम केवल विद्यार्थियों की उपलब्धि नहीं होते, बल्कि उनके पीछे

शिक्षकों, अभिभावकों और प्रशासन की संतुक्त मेहनत होती है। इसलिए बेहतर परिणाम के लिए सभी संबंधित पक्षों को मिलकर कार्य करना होगा। शिक्षकों की पदेन्नति और मांगों पर विचार का आश्वासन शिक्षकों की विभिन्न मांगों का उल्लेख करते हुए मंत्री ने कहा कि सरकार शिक्षकों की पदेन्नति की प्रक्रिया को जल्द आगे बढ़ाने की दिशा में काम कर रही है। उन्होंने कहा कि पुराने पेंशन योजना (ओपीएस) सहित शिक्षकों की जायज मांगों पर प्राथमिकता से विचार किया जाएगा। सरकारी कर्मचारियों के आवास निर्माण के संबंध में भी उन्होंने एक महत्वपूर्ण घोषणा की। मंत्री के अनुसार, सरकारी कर्मचारियों के भवन निर्माण के लिए सरकार की ओर से एक करोड़ रुपये की अनुदान राशि के अतिरिक्त मांड्या जिले के विधायक 10-10 लाख रुपये तथा विधान परिषद के सदस्य 5-5 लाख रुपये की सहायता देंगे। शिक्षकों के सम्मान में Tr लगाने का उल्लेख मंत्री ने शिक्षकों के सम्मान को बढ़ावा देने के लिए उनके नाम के आगे Tr लगाने के सरकार के निर्देश का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि यह शिक्षकों के पेशे के प्रति सम्मान की भावना को प्रदर्शित करने का एक प्रयास है।

वोटिंग के बाद कांग्रेस की बाड़ाबंदी, रिजॉर्ट में प्रत्याशी हज समिति की जमीन पर FIR, आजम खां समेत पांच नामजद

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
जयपुर, 11 सितंबर 2026। राजस्थान नगर निकाय चुनाव के पहले चरण का मतदान समाप्त होते ही राजनीतिक दलों ने अपने प्रत्याशियों को एकजुट रखने की कवावद तेज कर दी है। कांग्रेस ने कई निकायों में अपने पार्षद प्रत्याशियों की बाड़ाबंदी शुरू कर दी है। पार्टी की ओर से यह कदम संभावित खरीद-फरोख्त और चुनाव परिणाम के बाद होने वाली राजनीतिक जोड़-तोड़ की आशंका के मद्देनजर उठाया गया बताया जा रहा है। 9 सितंबर को पहले चरण में प्रदेश के 162 नगरीय निकायों में मतदान हुआ था। इन चुनावों में 39 जिलों के 162 निकायों में 5,393 पार्षद पदों के लिए 20 हजार से अधिक प्रत्याशी मैदान में थे। पहले चरण में करीब 76.41 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। मजबूत स्थिति वाले निकायों पर विशेष नजर कांग्रेस नेताओं के अनुसार पार्टी ने उन निकायों में प्रत्याशियों को एकजुट रखने पर विशेष ध्यान दिया है, जहां उसे बोर्ड गठन की सुव्यवस्था मजबूत नजर आ रही है। जयपुर और आसपास के क्षेत्रों के साथ-साथ अन्य जिलों के कुछ नगर निकायों में भी प्रत्याशियों को अलग-अलग स्थानों पर



रूप से उन परिस्थितियों से बचने के लिए अपनाई जाती है, जब चुनाव परिणाम आने के बाद बोर्ड बनाने के लिए कुछ सीटों का अंतर निर्णायक बन जाता है। हाड़ौती क्षेत्र में भी मतदान समाप्त होने के बाद भाजपा और कांग्रेस दोनों द्वारा प्रत्याशियों को सुव्यवस्थित स्थानों पर ले जाने की खबरें सामने आई हैं। इससे संकेत मिलता है कि इस चुनाव में केवल मतदान तक ही नहीं, बल्कि परिणाम और बोर्ड गठन तक

राजनीतिक प्रतिस्पर्धां तीखी रहने वाली है। मोबाइल फोन के इस्तेमाल पर भी निगरानी बाड़ाबंदी के दौरान कुछ स्थानों पर ले जाया गया। पार्टी स्तर पर इन स्थानों को सार्वजनिक नहीं किया जा रहा है। पार्टी राजनीतिक दलों की यह रणनीति मुख्य रूप से उन परिस्थितियों से बचने के लिए अपनाई जाती है, जब चुनाव परिणाम आने के बाद बोर्ड बनाने के लिए कुछ सीटों का अंतर निर्णायक बन जाता है। हाड़ौती क्षेत्र में भी मतदान समाप्त होने के बाद भाजपा और कांग्रेस दोनों द्वारा प्रत्याशियों को सुव्यवस्थित स्थानों पर ले जाने की खबरें सामने आई हैं। इससे संकेत मिलता है कि इस चुनाव में केवल मतदान तक ही नहीं, बल्कि परिणाम और बोर्ड गठन तक

की लोकेशन गोपनीय रखने और बाहरी राजनीतिक संपर्कों से बचाने का तर्क दिया जा रहा है। हालांकि, यह व्यवस्था राजनीतिक दलों की आंतरिक रणनीति का हिस्सा है। इसकी वास्तविक आवश्यकता और प्रभाव को लेकर अलग-अलग राजनीतिक मत हो सकते हैं। विपक्षी दल इसे राजनीतिक दबाव या असुरक्षा की रणनीति के रूप में देख सकते हैं, जबकि संबंधित पार्टी इसे अपने प्रत्याशियों को

सुरक्षित और एकजुट रखने का उपाय बता रही है। खरीद-फरोख्त की आशंका के रूप राजनीति गर्म कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने चुनाव प्रक्रिया के दौरान भाजपा पर निकाय बोर्डों के गठन के लिए संभावित खरीद-फरोख्त की कोशिशों का आरोप लगाया था। कांग्रेस का कहना है कि परिणाम आने के बाद किसी भी प्रकार की राजनीतिक जोड़-तोड़ को रोकने के लिए प्रत्याशियों को एकजुट रखना जरूरी है। हालांकि, ऐसे आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि आवश्यक है और किसी भी दल द्वारा लगाए गए राजनीतिक आरोपों को जीत-हार के रूप में नहीं देखा जा सकता। निकाय चुनाव में बोर्ड गठन का वास्तविक समीकरण परिणाम घोषित होने और संबंधित निकायों में निर्वाचित पार्षदों की संख्या स्पष्ट होने के बाद ही सामने आएगा। बागियों पर भी पार्टियों की नजर इस चुनाव में भाजपा और कांग्रेस दोनों के सामने बागी प्रत्याशियों की चुनौती भी रही है। टिकट वितरण को लेकर दोनों प्रमुख दलों में असंतोष सामने आया और बड़ी संख्या में बागी प्रत्याशी मैदान में उतरे। ऐसे प्रत्याशी कई निकायों में जीत-हार का समीकरण प्रभावित कर सकते हैं। कांग्रेस की ओर से भी ऐसे प्रत्याशियों से संपर्क बनाए रखने की कोशिश की जा

रही है, जिन्हें भविष्य में बोर्ड गठन के लिए समर्थन के संभावित स्रोत के रूप में देखा जा सकता है। स्थानीय राजनीति में निर्दलीय और बागी पार्षदों की भूमिका इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि कई निकायों में अध्यक्ष या सभापति के चुनाव में मामूली संख्या का अंतर भी निर्णायक हो सकता है। असली परीक्षा अब परिणाम के बाद पहले चरण के मतदान में मतदाताओं ने अपना फैसला ईवीएम में दर्ज कर दिया है। अब राजनीतिक दलों की नजर परिणाम और उसके बाद बोर्ड गठन पर है। पहले चरण के बाद राज्य के दूसरे चरण का मतदान 11 सितंबर को हो रहा है, जबकि मतगणना 14 सितंबर को निर्धारित है। ऐसे में प्रत्याशियों की बाड़ाबंदी ने राजस्थान की स्थानीय राजनीति में एक बार फिर रिजॉर्ट पॉलिटिक्स की चर्चा को तेज कर दिया है। सवाल केवल इतना नहीं है कि कौन-सा दल कितने पार्षद जीतता है, बल्कि यह भी महत्वपूर्ण होगा कि निर्वाचित पार्षद अपने दल के साथ कितने मजबूती से खड़े रहते हैं और बोर्ड गठन के समय राजनीतिक समीकरण किस दिशा में जाते हैं।



भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
लखनऊ, 11 सितंबर 2026। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में राज्य हज समिति की जमीन की बिक्री में कथित अनियमितताओं के मामले ने नया मोड़ ले लिया है। उत्तर प्रदेश सतर्कता अधिष्ठान (विजिलेंस) ने समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं तत्कालीन राज्य हज समिति अध्यक्ष आजम खां समेत पांच लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। मामला ऐशबाग के कायमखेड़ा क्षेत्र में स्थित करीब 60 हजार वर्गफीट जमीन की बिक्री से जुड़ा है। विजिलेंस जांच में समिति को करीब 2.08 करोड़ रुपये से अधिक की राजस्व क्षति होने की बात सामने आई है। पांच लोगों पर दर्ज हुआ मामला एफआईआर में आजम खां के अलावा हज समिति के तत्कालीन सचिव

लईक अहमद, तत्कालीन सचिव डॉ. एमएए खान तथा अमिश डेवलपर्स से जुड़े मोहम्मद अयूब और मुस्तकीम अहमद को आरोपी बनाया गया है। विजिलेंस के अनुसार, जमीन की बिक्री प्रक्रिया में निर्धारित नियमों और शर्तों के पालन को साजिश और भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम से संबंधित धाराएं लगाए जाने की जानकारी सामने आई है। अब विवेचना के दौरान जमीन की बिक्री, संबंधित दस्तावेजों, बैनमों और वित्तीय लेन-देन समेत अन्य पहलुओं की जांच की जाएगी। आगे क्या होगा कार्रवाई? एफआईआर दर्ज होने के बाद विजिलेंस मामले में नामजद आरोपियों से पूछताछ और दस्तावेजों की जांचों के परीक्षण की प्रक्रिया आगे बढ़ा सकती है। ताजा रिपोर्टों के मुताबिक, आजम खां से जेल में पूछताछ और उनका बयान दर्ज करने के लिए न्यायालय से अनुमति लेने की प्रक्रिया भी प्रस्तावित है। मामले में अब सबसे महत्वपूर्ण पहलु यह होगा कि जांच में सामने आए आरोपों के समर्थन में कौन-कौन से दस्तावेज और साक्ष्य मिलते हैं? तथा जिम्मेदारी अदालत में साक्ष्यों और न्यायिक प्रक्रिया के आधार पर तय होगी। शासन के आदेश के बाद शुरू हुई जांच रिपोर्टों के अनुसार, उत्तर प्रदेश शासन ने इस मामले की

नौकरी नहीं, कारोबार की राह: युवाओं को स्टार्टअप का सहारा यमुना का पानी बदलेगा राजस्थान की तस्वीर!

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
देहरादून, 11 सितंबर 2026। उत्तराखंड में युवाओं के लिए रोजगार तलाशने के साथ अपना कारोबार खड़ा करने के अवसर भी बढ़ाने की कोशिश की जा रही है। राज्य सरकार स्टार्टअप और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए आर्थिक सहायता, प्रशिक्षण, मार्गदर्शन, इनक्यूबेशन और बौद्धिक संपदा से जुड़ी सुविधाओं को बढ़ावा दे रही है। उद्देश्य यह है कि युवाओं के नए विचार केवल कागज तक सीमित न रहें, बल्कि उन्हें व्यावसायिक गतिविधियों और रोजगार सृजन में बदला जा सके। राज्य में स्टार्टअप इकोसिस्टम को मजबूत करने के लिए सरकार ने नीतिगत स्तर पर कई प्रावधान किए हैं। ग्रामीण स्तर पर भी उद्यमिता को बढ़ावा देने वाली मुख्यमंत्री उद्यमशाला योजना में विचार समर्थन, व्यवसाय योजना, प्रशिक्षण, बाजार तक पहुंच, वित्त और मेंटरशिप जैसी सुविधाओं का प्रावधान है। नए विचारों को शुरूआती सहारा किसी भी उद्यमिता के सामने शुरूआती दौर में सबसे बड़ी चुनौती पूंजी, मार्गदर्शन और बाजार तक पहुंच की होती है। इसी जरूरत को ध्यान में रखते हुए राज्य की स्टार्टअप व्यवस्था में नए उद्यमियों को



शुरूआती सहायता, सीड फंडिंग और अन्य प्रोत्साहन उपलब्ध कराने की व्यवस्था है। हालांकि वास्तविक लाभ स्टार्टअप की पात्रता, पंजीकरण, परियोजना और संबंधित सरकारी प्रक्रिया के आधार पर तय होता है। इस तरह की सहायता का उद्देश्य युवाओं को केवल कारोबार शुरू करने के लिए प्रेरित करना नहीं, बल्कि उनके उत्पाद या सेवा को बाजार तक पहुंचाने में भी मदद करना है। इनक्यूबेशन केंद्र बनने के आधार स्टार्टअप के विकास में हैं। इसी जरूरत को ध्यान में रखते हुए राज्य की स्टार्टअप व्यवस्था में नए उद्यमियों को

व्यवसाय योजना, तकनीकी मार्गदर्शन, प्रशिक्षण, मेंटरशिप और नेटवर्किंग जैसी सुविधाएं मिल सकती हैं। उत्तराखंड की

सहायता मिल सके। ग्रामीण युवाओं पर भी जोर उत्तराखंड जैसे पहाड़ी राज्य में स्टार्टअप और उद्यमिता को केवल बड़े शहरों तक सीमित रखना चुनौतीपूर्ण है। इसी वजह से ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्थानीय संसाधनों और समस्याओं पर आधारित कारोबार को प्रोत्साहित करने की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री उद्यमशाला योजना के तहत ग्रामीण युवाओं, महिलाओं, स्वयं सहायता समूहों और सामाजिक रूप से वंचित समूहों को उद्यमिता से जोड़ने के लिए विचार समर्थन, व्यवसाय योजना, प्रशिक्षण, बाजार और वित्त तक पहुंच तथा मेंटरशिप जैसी सेवाओं का उल्लेख किया गया है। इससे स्थानीय स्तर पर कृषि, पर्यटन, हस्तशिल्प, खाद्य प्रसंस्करण, तकनीक और अन्य क्षेत्रों से जुड़े छोटे उद्यमों को विकसित करने की संभावनाएं बढ़ सकती हैं। पेटेंट और नए उत्पादों को बढ़ावा स्टार्टअप के लिए केवल कारोबार शुरू करना ही पर्याप्त नहीं है। नई तकनीक, उत्पाद या व्यावसायिक मॉडल तैयार करने वाले युवाओं के लिए बौद्धिक संपदा अधिकार भी महत्वपूर्ण हैं। पेटेंट, ट्रेडमार्क और औद्योगिक डिजाइन जैसे अधिकार किसी नवाचार को कानूनी संरक्षण देने में मदद करते हैं।

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
नई दिल्ली/जयपुर, 11 सितंबर 2026। राजस्थान की जल संकट से जूझते इलाकों के लिए यमुना जल परियोजना को बड़ी उम्मीद के रूप में देखा जा रहा है। करीब तीन दशक पुराने जल बंटवारे के मुद्दे को आगे बढ़ाते हुए राजस्थान और हरियाणा ने 29 जून 2026 को परियोजना के निर्माण और क्रियान्वयन के लिए महत्वपूर्ण समझौता किया। समझौते के तहत राजस्थान को यमुना का निर्धारित हिस्सा भूमिगत पाइपलाइन के माध्यम से उपलब्ध कराने की व्यवस्था की गई है। इस समझौते से खास तौर पर राजस्थान के सीकर, चूरू और झुंझुनू जैसे जल-संकट वाले जिलों में पेयजल उपलब्धता मजबूत होने की उम्मीद है। केंद्र सरकार के अनुसार परियोजना से हरियाणा के भिवानी और फतेहाबाद क्षेत्रों को भी लाभ मिलेगा। 1994 के समझौते को मिली नई दिशा राजस्थान और हरियाणा के बीच यमुना जल को लेकर लंबे समय से चर्चा होती रही है। 23 जून 2026 को केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी.आर. पाटिल की अध्यक्षता में नई दिल्ली में राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के बीच बैठक



राजस्थान के हिस्से के पानी की आपूर्ति पर सहमति बनी। हरियाणा सरकार ने राजस्थान को उसके निर्धारित हिस्से का पानी उपलब्ध कराने पर सहमति जताई और इसके बाद 29 जून को दोनों राज्यों के बीच समझौते पर हस्ताक्षर हुए। 580 एमसीएम पानी की भूमिगत पाइपलाइन समझौते के अनुसार जुलाई से अक्टूबर के बीच यमुना नहर से करीब 580 एमसीएम क्षमता के कच्चे जलाशय का भी मिलियन क्यूबिक मीटर (एमसीएम) पानी तीन भूमिगत पाइपलाइनों के जरिए राजस्थान तक पहुंचाने की योजना है। परियोजना में पश्चिमी यमुना नहर प्रणाली के माध्यम से राजस्थान के हिस्से के पानी को भूमिगत पाइपलाइन से ले जाने की व्यवस्था की गई है। केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय से जुड़ी जानकारी के अनुसार 1994 के समझौते के तहत राजस्थान के

लिए हथिनीकुंड बैराज पर जुलाई से अक्टूबर के दौरान करीब 577 एमसीएम पानी का आवंटन दर्ज है। परियोजना की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट में भूमिगत पाइपलाइन के माध्यम से इस पानी के हस्तांतरण को योजना बनाई गई है। 34,102 करोड़ से अधिक की परियोजना इस परियोजना की अनुमानित लागत 34,102.24 करोड़ बताई गई है। उपलब्ध सरकारी

जानकारी के अनुसार राजस्थान परियोजना का प्राथमिक लाभार्थी राज्य होगा और पूंजीगत लागत, पुनर्वास तथा मुआवजे से जुड़े खर्चों की जिम्मेदारी राजस्थान की होगी। परियोजना की निर्धारित की गई है। परियोजना में समझौते के हविष्यावास में लगभग 386 एमसीएम क्षमता के कच्चे जलाशय का भी प्रावधान किया गया है, जिसे पेयजल आपूर्ति के लिए उपयोग किया जाना है। सूखे इलाकों के लिए राहत की उम्मीद राजस्थान के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में पेयजल की उपलब्धता लंबे समय से पानी को भूमिगत पाइपलाइन से ले जाने की व्यवस्था की गई है। केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय से जुड़ी जानकारी के अनुसार 1994 के समझौते के तहत राजस्थान के

का उद्देश्य केवल पेयजल उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि जल संसाधनों के बेहतर प्रबंधन के माध्यम से क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास को गति देना भी है। पानी की स्थायी उपलब्धता कृषि, पशुपालन और स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए भी सकारात्मक प्रभाव पैदा कर सकती है। विकास के लिए पानी बनेगा आधार राजस्थान में जल उपलब्धता और विकास का संबंध सीधे तौर पर देखा जाता है। जिन क्षेत्रों में पर्याप्त पानी उपलब्ध होता है, वहां कृषि गतिविधियों, पशुपालन, उद्योग और अन्य आर्थिक गतिविधियों के विस्तार में महत्वपूर्ण बढ़ती है। इसी दृष्टि से यमुना जल परियोजना को केवल पाइपलाइन बिछाने की परियोजना के बजाय दीर्घकालिक जल प्रबंधन के एक बड़े प्रयास के रूप में देखा जा रहा है। हालांकि परियोजना के वास्तविक आर्थिक और सामाजिक परिणाम इसके समयबद्ध क्रियान्वयन तथा जल वितरण व्यवस्था की प्रभावशीलता पर निर्भर करेंगे। राज्यों के बीच सहयोग की परीक्षा भी यमुना जल परियोजना को लेकर समझौता होने के बावजूद आगे की राह पूरी तरह आसान नहीं है। इतनी बड़ी परियोजना के लिए निर्माण, भूमि, पर्यावरण, वित्त, जल आवंटन, निगरानी और रखरखाव जैसे कई स्तरों पर समन्वय जरूरी होगा।

राहुल की सक्रियता से BJP को फायदा? पूनिया का तंज

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
चंडीगढ़, 11 सितंबर 2026। पंजाब में 2027 के विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक सरगमी तेज हो गई है। भारतीय जनता पार्टी ने राज्य में संगठन विस्तार और चुनावी तैयारियों को गति देना शुरू कर दिया है। इसी बीच पंजाब भाजपा के प्रभारी और राष्ट्रीय महासचिव डॉ. सतीश पूनिया ने कांग्रेस नेता एवं लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी की पंजाब में संभावित सक्रियता को लेकर तंज कसा है। पूनिया ने कहा कि भाजपा चाहती है कि राहुल गांधी पंजाब में अधिक सक्रिय हों। उन्होंने दावा किया कि राहुल गांधी जहां भी चुनावी राजनीति में सक्रिय होते हैं, वहां कांग्रेस को नुकसान और भाजपा को फायदा होता है। हालांकि यह पूनिया का राजनीतिक आकलन और दावा है, जिसे चुनावी नतीजों और राजनीतिक परिस्थितियों के संदर्भ में ही देखा जाना चाहिए। नशा, भ्रष्टाचार और कानून-व्यवस्था हंगे प्रमुख मुद्दे पूनिया ने पंजाब चुनाव के लिए भाजपा की प्राथमिकताओं का उल्लेख करते हुए नशा मुक्ति, भ्रष्टाचार और कानून-व्यवस्था को प्रमुख मुद्दा बताया। उन्होंने कहा कि पंजाब को नशे से मुक्त करना पार्टी की बड़ी प्राथमिकता होगी। भाजपा नेता ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि पंजाब में नशे की समस्या नहीं नहीं है और कांग्रेस को राज्य में कई बार सरकार चलाने का अवसर मिला। उनका आरोप है कि इसके बावजूद समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो सका। इन



अभियान चलाने की भी तैयारी कर रही है। सभी 117 सीटों पर अकेले चुनाव लड़ेंगी भाजपा पंजाब विधानसभा चुनाव की रणनीति को लेकर पूनिया ने भाजपा का रुख स्पष्ट करते हुए कहा कि पार्टी राज्य की सभी 117 विधानसभा सीटों पर अपने दम पर चुनाव लड़ेंगी। उन्होंने किसी दल के साथ गठबंधन की संभावना को भी खारिज किया है। ताजा रिपोर्टों के अनुसार, भाजपा नेतृत्व ने पंजाब में संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने और सभी सीटों पर चुनावी तैयारी करने का निर्देश दिया है। पूनिया के इस रुख से भाजपा और शिरोमणि अकाली दल के बीच संभावित गठबंधन को लेकर चल रही अटकलों पर किन्हाहाल विराम लगता दिखाई दे रहा है। हालांकि चुनाव तक राजनीतिक परिस्थितियों में बदलाव की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। संगठन मजबूत करने पर भाजपा का जोर पूनिया को

अगस्त 2026 में पंजाब भाजपा का प्रभारी बनाए जाने के बाद पार्टी ने संगठनात्मक गतिविधियां तेज की हैं। उनके सामने पंजाब में भाजपा के संगठन को मजबूत करने और पार्टी के पारंपरिक शहरी आधार से आगे बढ़कर राज्य के व्यापक सामाजिक एवं राजनीतिक वर्गों तक पहुंच बनाने की चुनौती है। पूनिया ने अपने पंजाब दौर के दौरान राज्य पदाधिकारियों, जिला स्तर के नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ बैठकें कर संगठन की स्थिति की समीक्षा की। पार्टी का जोर बुध स्तर से लेकर राज्य स्तर तक संगठन को सक्रिय करने पर है। सचिन पायलट की नियुक्ति भी प्रतिक्रिया पावलाद कांग्रेस में सचिन पायलट को प्रभारी बनाए जाने के सवाल पर पूनिया ने कहा कि पायलट राजस्थान सहित अन्य राज्यों में भी एक प्रमुख राजनीतिक चेहरे के रूप में सामने आए हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा अपना काम कर रही है और कांग्रेस अपने स्तर पर राजनीतिक रणनीति बनाएगी। पूनिया ने पंजाब में भाजपा को कमजोरी समझने से भी इनकार किया और दावा किया कि पार्टी आगामी चुनाव को चुनौती के रूप में लेकर पूरी तैयारी कर रही है। पंजाब की राजनीति में बढ़ती प्रतिस्पर्धा 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले पंजाब में आम आदमी पार्टी, कांग्रेस, भाजपा और शिरोमणि अकाली दल सहित विभिन्न राजनीतिक दल अपनी-अपनी रणनीति तैयार कर रहे हैं। भाजपा का सभी 117 सीटों पर अकेले चुनाव लड़ने का ऐलान उसे राज्य में अपने संगठन और जनाधार की स्वतंत्र रूप से परखने का अवसर देगा।

शेयर बाजार पर दबाव, सेंसेक्स-निफ्टी गिरे; कच्चा तेल 108 डॉलर के पार

भारतार्थ खबर संवाददाता अशोक कुमार सिंह (Bhaarataarth.com)
मुंबई, 11 सितंबर 2026। भारतीय शेयर बाजार में शुक्रवार को दमबंद देखने को मिला। वैश्विक तनाव और कच्चे तेल की कीमतों में तेज उछाल का असर घरेलू बाजार के निवेशकों के sentiment पर पड़ा। कारोबार के शुरूआती दौर में सेंसेक्स 700 से अधिक अंक तक नीचे गया, जबकि निफ्टी भी 23,250 के आसपास पहुंच गया। कच्चे तेल की तेजी बनी बड़ी चिंता ब्रेंट क्रूड की कीमत 108 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर पहुंचने से भारत के लिए चिंता बढ़ी है। भारत अपनी तेल जरूरतों का बड़ा हिस्सा आयात करता है, इसलिए कच्चे तेल की कीमतों में तेजी का असर आयात बिल, महंगाई और रुपये पर पड़ सकता है। बाजार में व्यापक बिकवाली शुक्रवार के कारोबार में कई प्रमुख सेक्टर दबाव में रहे। वित्तीय, मेटल और ऑटो शेयरों में कमजोरी देखी गई। छोटे और मिड-कैप शेयरों में भी गिरावट रही। बाजार में बढ़ती महंगाई और ब्याज दरों को लेकर निवेशकों की चिंता का असर दिखाई दिया। हालांकि कारोबार के अंत तक शुरूआती गिरावट कुछ कम हुई। दिन के अंत में सेंसेक्स 120.83 अंक गिरकर 74,781.76 और निफ्टी 79.70 अंक टूटकर 23,398.10 पर बंद हुआ। रुपये पर भी दबाव कच्चे तेल की ऊंची कीमतों और विदेशी निवेश से जुड़े दबाव के बीच भारतीय रुपये में भी कमजोरी देखी गई। इससे बाजार में सावधानी और बढ़ी है। निवेशकों की नजर अब वैश्विक घटनाक्रम पर आने वाले कारोवारी सत्रों में कच्चे तेल की कीमत, पश्चिम एशिया की स्थिति, वैश्विक ब्याज दरों और विदेशी निवेशकों की गतिविधियों पर बाजार की दिशा काफी हद तक निर्भर रह सकती है। भारतार्थ खबर का निष्कर्ष: शुक्रवार की गिरावट ने एक बार फिर दिखाया कि वैश्विक भू-राजनीतिक तनाव और तेल की कीमतों में बदलाव का सीधा असर भारतीय शेयर बाजार पर पड़ सकता है। निवेशकों के लिए आने वाले दिनों में बाजार में उतार-चढ़ाव पर नजर रखना महत्वपूर्ण रहेगा।

तालाब में डूबती कार, सुरता परमार ने बचाया मासूम परिवार

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
द्वारपुर, 11 सितंबर 2026। राजस्थान के द्वारपुर में तालाब में डूबती कार से एक 11 माह के मासूम सहित परिवार को बचाने के लिए 38 वर्षीय सुरता परमार के साहस की सराहना हो रही है। उपलब्ध विवरण के अनुसार, कार अनियंत्रित होकर करीब 10 फीट गहरे तालाब में जा गिरी थी। हादसे के दौरान कार में परिवार के सदस्य फंस गए। ऐसी परिस्थिति में सुरता परमार ने अपनी जान की परवाह किए बिना पानी में उतरकर बचाव कार्य शुरू किया। बताया गया कि घटना के समय तालाब के किनारे लोग मौजूद थे। इसी दौरान डूबती कार के भीतर से बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी। सुरता परमार ने तत्काल पानी में छलांग लगाई और कार तक पहुंची। उन्होंने कार को खिड़की का शीशा तोड़कर अंदर फंसे 11 माह के बच्चे को बाहर निकाला और सुरक्षित किनारे तक पहुंचाया। बच्चे को बचाने के बाद फिर पानी में उतरीं उपलब्ध जानकारी के मुताबिक, बच्चे को सुरक्षित बाहर निकालने के बाद भी सुरता परमार नहीं रुकीं। उन्होंने दोबारा तालाब में जाकर कार में फंसे बच्चे के माता-पिता को बाहर निकालने का प्रयास किया। बताया गया कि दोनों बेहोशी की स्थिति में थे। सुरता ने उन्हें एक-एक कर बाहर निकालकर सुरक्षित स्थान तक पहुंचाया।



में सामने आया है, जब दुर्घटना की स्थिति में अक्सर लोग तत्काल सहायता करने के बजाय तमाशबीन बने रहने या घटना को मोबाइल कैमरे में रिकॉर्ड करने में लग जाते हैं। ऐसे माहौल में किसी व्यक्ति का अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना संकट में फंसे लोगों की मदद के लिए आगे आना मानवीय संवेदना और साहस का उदाहरण माना जा सकता है। हालांकि, किसी भी जल दुर्घटना में बिना प्रशिक्षण या सुरक्षा उपकरण के गहरे पानी में उतरना अत्यंत जोखिमपूर्ण होता है। विशेषज्ञों की सामान्य सलाह है कि ऐसी स्थिति में तत्काल आपातकालीन सेवाओं और प्रशिक्षित बचाव दल को सूचना दी जाए।

इस घटना में सुरता परमार द्वारा किया गया प्रयास साहसिक था, लेकिन इसे सामान्य परिस्थितियों में अपनाने के बजाय प्रशिक्षित बचाव व्यवस्था को प्राथमिकता देना आवश्यक है। समाज के लिए प्रेरक उदाहरण सुरता परमार की बहादुरी ने यह संदेश दिया है कि संकट की घड़ी में संवेदनशीलता और त्वरित निर्णय किसी की जिंदगी बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उनके प्रयास में खास तौर पर एक छोटे बच्चे को बचाने की प्राथमिकता और उसके बाद परिवार के अन्य सदस्यों को बाहर निकालने की कोशिश उल्लेखनीय रही। ऐसी घटनाएं समाज में मानवता, मदद की भावना और नागरिक जिम्मेदारी को मजबूत करने की प्रेरणा देती हैं। किसी दुर्घटना के समय केवल दृशक बने रहने के बजाय सुनिश्चित तरीके से मदद पहुंचाना और आपातकालीन सेवाओं को सक्रिय करना हर नागरिक की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। द्वारपुर की इस घटना में सुरता परमार का साहस निर्भीक रूप से सराहनीय है। एक सामान्य नागरिक द्वारा कठिन और जोखिमपूर्ण परिस्थिति में फंसे परिवार की मदद के लिए आगे आना मानवीय संवेदना का उल्लेखनीय उदाहरण है। उनके साहस को समाज पेटा जितना जरूरी है, उतना ही जरूरी यह सुनिश्चित करना भी है कि भविष्य पानी में उतरना अत्यंत जोखिमपूर्ण होता है। विशेषज्ञों की सामान्य सलाह है कि ऐसी स्थिति में तत्काल आपातकालीन सेवाओं और प्रशिक्षित बचाव दल को सूचना दी जाए।